Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी संघर्ष

डॉ. अनीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग।

सनातन धर्म महिला महाविद्यालय नरवाना (जींद)

dr.anita.chhabra@gmail.com

सार

मन्नू भंडारी ने हिंदी साहित्य की नई कहानी और उपन्यास परंपरा में स्त्री को पारंपरिक भावुकता या मूक सहनशीलता के पिंजरे से मुक्त कर एक सोचने, प्रश्न करने और निर्णय लेने वाली स्वतंत्र मानवीय सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उनका उपन्यास-संसार नारी संघर्ष को महज पुरुष-विरोध या पारिवारिक विद्रोह के सीमित दायरे में न रखकर उसे आत्मसम्मान, मध्यवर्गीय नैतिकता, भावनात्मक असुरक्षा और सामाजिक-राजनीतिक न्याय-बोध जैसे व्यापक संदर्भों से जोड़ता है। 'आपका बंटी' में जहाँ शकुन का संघर्ष वैवाहिक असंतोष, स्त्री-स्वतंत्रता और मातृत्व के बीच की जटिल कशमकश को बंटी के मानसिक संसार के बिखरने के माध्यम से दिखाता है, वहीं 'एक इंच मुस्कान' आधुनिक दाम्पत्य संबंधों के तनाव तथा भावनात्मक खोखलेपन को उजागर करता है। इसी तरह 'स्वामी' उपन्यास परंपरा, दाम्पत्य और स्त्री की आंतरिक आकांक्षाओं के द्वंद्व को स्वर देता है, तो 'महाभोज' में वे घरेलू विमर्श से ऊपर उठकर स्त्री को सामाजिक न्याय, जाति, सत्ता और जन-संघर्ष की वृहत्तर राजनीतिक चेतना के साथ खड़ा करती हैं। अंततः, मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी संघर्ष केवल दुःख झेलने की गाथा नहीं है, बल्कि वह संबंधों की असमानता को पहचानकर सामाजिक व्यवस्था से टकराने और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की अर्थवत्ता खोजने का एक अत्यंत जीवंत और वास्तविक दस्तावेज़ है।

मुख्य शब्द

मन्नू भंडारी, नारी संघर्ष, आपका बंटी, महाभोज, एक इंच मुस्कान, स्वामी, स्त्री अस्मिता, मध्यवर्ग, पितृसत्ता, राजनीतिक चेतना

1. प्रस्तावना

मन्नू भंडारी ने हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री को पारंपरिक मर्यादा, त्याग और मूक सहनशीलता के पुरुष-केंद्रित सांचे से मुक्त कर उसे अपनी शर्तों पर जीने वाली एक प्रामाणिक, सजग और संवेदनशील मानवीय सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उनका लेखन केवल भावुकता या वैचारिक घोषणाओं पर आधारित न होकर मध्यवर्गीय नैतिकता, पारिवारिक विघटन और सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों से उपजे स्त्री-अनुभवों की वास्तविक जटिलताओं को उजागर करता है।[vii] नई कहानी आंदोलन की पृष्ठभूमि से जुड़ी मन्नू भंडारी के यहाँ नारी संघर्ष केवल बाहरी दमन के विरुद्ध नहीं, बल्कि वैवाहिक असमानता, भावनात्मक असुरक्षा, मातृत्व व स्वायत्तता के द्वंद्व तथा निर्णयहीन संबंधों से उपजी मानसिक पीड़ा के खिलाफ एक बहुआयामी संघर्ष है।[vii] उनके उपन्यासों में यह संघर्ष निजी और घरेलू धरातल से उठकर सार्वजनिक और राजनीतिक भूमि तक विस्तृत होता है; जहाँ 'आपका बंटी' तलाक और बिखरते दाम्पत्य के बीच स्त्री-स्वतंत्रता तथा बच्चे के मनोवैज्ञानिक संकट को दर्शाता है, 'एक इंच मुस्कान' आधुनिक संबंधों के खोखलेपन को उभारता है और 'स्वामी' परंपरा व आंतरिक आकांक्षाओं के टकराव को व्यक्त करता है, वहीं 'महाभोज' महिला लेखन को घर-परिवार की सीमा से बाहर ले जाकर राजनीति, जाति, सत्ता की क्रूरता और सामाजिक न्याय के जन-संघर्ष से जोड़ देता है।[vii]

इस शोध-पत्र का उद्देश्य मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी संघर्ष के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है। अध्ययन का मुख्य प्रश्न यह है कि मन्नू भंडारी की स्त्रियाँ किन सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक स्थितियों में संघर्ष करती हैं और उनके संघर्ष का स्वरूप किस प्रकार बदलता है। यह भी देखा जाएगा कि उनके उपन्यासों में नारी संघर्ष केवल निजी मुक्ति तक सीमित है या वह व्यापक सामाजिक चेतना से भी जुड़ता है।[vii]

2. मन्नू भंडारी का कथा-संसार और स्त्री-दृष्टि

मन्नू भंडारी का कथा-संसार सरल भाषा, गहरी संवेदना और तीक्ष्ण सामाजिक दृष्टि से निर्मित है। उनकी शैली में अनावश्यक अलंकरण नहीं है। वे सामान्य मध्यवर्गीय जीवन की ऐसी स्थितियों को पकड़ती हैं जो ऊपर से साधारण लगती हैं, पर भीतर से अत्यंत जटिल होती हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में स्त्री का संघर्ष अत्यधिक नाटकीय न होकर जीवन के यथार्थ से जुड़ा हुआ लगता है।[vii]

उनकी स्त्री पात्र अक्सर ऐसी परिस्थिति में दिखाई देती हैं जहाँ उन्हें जीवन के स्थापित नियमों पर प्रश्न करना पड़ता है। वे हमेशा सफल विद्रोही नहीं हैं, पर वे मौन पीड़िता भी नहीं हैं। उनके भीतर असंतोष है, आत्मसम्मान है, संबंधों को नए ढंग से समझने की आकांक्षा है और अपने जीवन को केवल दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार जीने से इनकार भी है। यही उनके लेखन का सबसे बड़ा स्त्रीवादी पक्ष है।[vii]

मन्नू भंडारी का स्त्री-विमर्श पश्चिमी अर्थ में केवल वैचारिक नारा नहीं है। उनके यहाँ स्त्री संघर्ष जीवन के स्वाभाविक अनुभव से पैदा होता है। विवाह में असमानता है, तो स्त्री प्रश्न करती है। प्रेम में अविश्वास है, तो स्त्री भीतर से टूटती है। मातृत्व है, तो वह उसे केवल त्याग का पवित्र रूप नहीं मानती, बल्कि उसके भीतर उपस्थित दबाव, अपराध-बोध और जिम्मेदारी को भी समझती है। राजनीति में जन की आवाज़ दबाई जाती है, तो वे सत्ता-संरचना की क्रूरता को कथा का विषय बनाती हैं।[vii]

मन्नू भंडारी स्वयं भी जीवन और लेखन के बीच गहरे द्वंद्व से गुज़रीं। उनकी आत्मकथ्यात्मक पुस्तक 'एक कहानी यह भी' उनके लेखकीय जीवन, पारिवारिक परिस्थितियों और रचना-संघर्ष को समझने में सहायक है। यह बात महत्वपूर्ण है कि उन्होंने स्त्री के अनुभव को केवल सहानुभूति से नहीं, बल्कि भीतर से जिया और पहचाना। इसलिए उनके स्त्री पात्र बनावटी नहीं लगते। वे कमजोर भी हैं, जिद्दी भी; संवेदनशील भी हैं, आहत भी; प्रेम करती हैं, पर अपने सम्मान को भी पहचानती हैं।[vii]

'आपका बंटी' में शकुन का चरित्र इसी जटिल स्त्री-दृष्टि का उदाहरण है। वह पति के साथ असंतुष्ट दाम्पत्य में रहकर केवल परिवार की मर्यादा निभाने वाली स्त्री नहीं रहना चाहती। वह अपनी स्वतंत्रता और सम्मान चाहती है। किंतु उसका संघर्ष सरल नहीं है, क्योंकि उसके निर्णय का असर बंटी पर पड़ता है। यह स्थिति स्त्री संघर्ष को अत्यंत जटिल बना देती है। यहाँ स्त्री की मुक्ति और मातृत्व का संबंध तनावपूर्ण हो जाता है।[vii]

'महाभोज' में मन्नू भंडारी स्त्री संघर्ष को व्यापक सामाजिक धरातल पर ले जाती हैं। रुक्मा जैसे पात्र प्रत्यक्षतः कथा के केंद्र में कम दिखाई दे सकते हैं, पर वे सत्ता, हिंसा और शोषण से प्रभावित जन-जीवन का हिस्सा हैं। इस उपन्यास में नारी संघर्ष केवल स्त्री-पुरुष संबंधों तक सीमित नहीं रहता; वह वर्ग, जाति, राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर स्त्री की स्थिति को भी छूता है।[vii]

इस प्रकार मन्नू भंडारी की स्त्री-दृष्टि निजी से सामाजिक और भावनात्मक से राजनीतिक तक फैली हुई है। वे स्त्री को केवल 'घर' की समस्या नहीं मानतीं, बल्कि समाज की व्यवस्था को समझने की दृष्टि बनाती हैं।[vii]

3. आपका बंटी में नारी संघर्ष: दाम्पत्य, मातृत्व और आत्मसम्मान

'आपका बंटी' मन्नू भंडारी का अत्यंत प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका कथ्य तलाक, टूटते हुए परिवार, बच्चे की मानसिक स्थिति और स्त्री-पुरुष संबंधों की विफलता से जुड़ा है। उपन्यास का केंद्र बंटी है, पर इसके भीतर शकुन का संघर्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। शकुन एक ऐसी स्त्री है जो टूटे हुए दाम्पत्य में केवल सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बने रहना स्वीकार नहीं करती। वह पति से अलग होती है, पुनर्विवाह करती है और अपने जीवन को नए ढंग से बनाना चाहती है। परंतु यही निर्णय बंटी के जीवन में गहरी अस्थिरता पैदा करता है।[vii]

यहाँ नारी संघर्ष का पहला आयाम वैवाहिक असमानता से जुड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज में विवाह को स्त्री का अंतिम लक्ष्य और स्थायी पहचान माना जाता है। विवाह टूटना केवल संबंध टूटना नहीं, बल्कि स्त्री की सामाजिक प्रतिष्ठा, मातृत्व और नैतिकता पर प्रश्नचिह्न लगना माना जाता है। शकुन इसी सामाजिक दबाव से जूझती है। वह असंतोषपूर्ण दाम्पत्य में रहने के बजाय अपने लिए अलग रास्ता चुनती है। यह चुनाव उसके आत्मसम्मान का संकेत है, परंतु इसके साथ अपराध-बोध और भावनात्मक जटिलता भी जुड़ी हुई है।[vii]

शकुन का संघर्ष यह दिखाता है कि स्त्री की स्वतंत्रता कभी-कभी सामाजिक और पारिवारिक संदर्भों में अत्यंत कठिन हो जाती है। वह अपने जीवन का निर्णय लेना चाहती है, पर माँ होने के कारण उसका निर्णय केवल उसका निजी निर्णय नहीं रह जाता। बंटी की मनःस्थिति बार-बार पाठक को यह सोचने पर विवश करती है कि टूटते हुए दाम्पत्य में सबसे अधिक चोट किसे लगती है। उपन्यास में बंटी के मानसिक विस्थापन को व्यक्त करते हुए एक जगह कहा गया है—"अपने घर से उखड़कर बंटी" जैसे हर जगह से उखड़ जाता है।[vii] यह छोटा-सा वाक्य पूरे उपन्यास की त्रासदी को खोल देता है।

बंटी की दृष्टि से शकुन का संघर्ष कई बार स्वार्थपूर्ण लग सकता है, क्योंकि बच्चा माँ को अपने पूर्ण अधिकार के रूप में देखना चाहता है। उसके लिए माँ का पुनर्विवाह केवल सामाजिक घटना नहीं है; यह उसके भावनात्मक संसार का विघटन है। एक मार्मिक स्थिति में बंटी को लगता है—"ममी उसकी नहीं रह गई हैं।"[vii] इस पंक्ति में बच्चे का गहरा अकेलापन है। परंतु आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह केवल माँ की गलती नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की त्रासदी है जिसमें स्त्री की स्वतंत्रता और मातृत्व को परस्पर विरोधी बना दिया जाता है।

शकुन के चरित्र की जटिलता इसी में है कि वह न तो पूर्णतः दोषी है और न पूर्णतः निर्दोष। वह अपने जीवन की सच्चाई से समझौता नहीं करना चाहती। वह पति के साथ असंतुष्ट संबंध में केवल बच्चे या समाज के नाम पर नहीं रहना चाहती। लेकिन वह बंटी की पीड़ा से मुक्त भी नहीं हो सकती। यही द्वंद्व 'आपका बंटी' को केवल तलाक की कहानी नहीं रहने देता, बल्कि उसे नारी संघर्ष और बाल-मनोविज्ञान का गहन उपन्यास बना देता है।[vii]

यहाँ नारी संघर्ष का दूसरा आयाम मातृत्व से जुड़ा है। भारतीय समाज स्त्री को माँ के रूप में अत्यधिक महिमा देता है, पर उसी माँ से अपेक्षा करता है कि वह अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सम्मान को त्याग दे। शकुन इस आदर्श माँ की परिभाषा में फिट नहीं बैठती। वह माँ है, पर केवल माँ नहीं है। वह पत्नी भी है, स्त्री भी है, व्यक्ति भी है। उसका संघर्ष इसी बहुस्तरीय पहचान का संघर्ष है।[vii]

'आपका बंटी' में स्त्री की स्वतंत्रता का प्रश्न बहुत संवेदनशील ढंग से उठता है। मन्नू भंडारी यहाँ किसी आसान निष्कर्ष पर नहीं पहुँचतीं। वे यह नहीं कहतीं कि शकुन का निर्णय पूर्णतः सही या पूर्णतः गलत है। वे पाठक को उस मानसिक और सामाजिक परिस्थिति में ले जाती हैं जहाँ स्त्री का कोई भी निर्णय पीड़ा से मुक्त नहीं होता। यदि वह असंतोषपूर्ण विवाह में रहती है तो अपनी अस्मिता खोती है; यदि अलग होती है तो बच्चे की पीड़ा उसके सामने आ खड़ी होती है।[vii]

इस दृष्टि से 'आपका बंटी' में नारी संघर्ष आत्मसम्मान और जिम्मेदारी के बीच का संघर्ष है। शकुन का चरित्र आधुनिक स्त्री की उस जटिल स्थिति को सामने लाता है जहाँ स्वतंत्रता की आकांक्षा और पारिवारिक भावनाएँ एक-दूसरे से उलझ जाती हैं। मन्नू भंडारी की विशेषता यह है कि वे स्त्री की स्वतंत्रता को भावुक नारे में नहीं बदलतीं, बल्कि उसके मानवीय परिणामों सहित प्रस्तुत करती हैं।[vii]

4. एक इंच मुस्कान और स्वामी में स्त्री-पुरुष संबंधों का द्वंद्व

'एक इंच मुस्कान' मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव का संयुक्त रूप से लिखा गया उपन्यास है। हिंदी साहित्य में यह रचना अपने प्रयोगधर्मी स्वरूप के कारण भी उल्लेखनीय है। इसमें स्त्री और पुरुष दृष्टि का अंतर, प्रेम, दाम्पत्य, आत्मीयता, अकेलापन और आधुनिक संबंधों की असुरक्षा महत्वपूर्ण रूप से सामने आते हैं। इस उपन्यास में नारी संघर्ष प्रत्यक्ष सामाजिक आंदोलन के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक संबंधों की अस्थिरता और आत्मसम्मान की खोज के रूप में आता है।[vii]

'एक इंच मुस्कान' की विशेषता यह है कि इसमें स्त्री-पुरुष संबंध को एकतरफा दृष्टि से नहीं देखा गया। संबंधों में आकर्षण है, परंतु साथ ही अहं, असुरक्षा, अपेक्षा और अविश्वास भी है। स्त्री पात्र केवल प्रेम की प्रतीक्षा करने वाली निष्क्रिय सत्ता नहीं है। वह संबंधों के भीतर अपनी जगह, अपनी गरिमा और अपने भावनात्मक सत्य को तलाशती है। यही तलाश उसका संघर्ष है।[vii]

मन्नू भंडारी के कथा-संसार में प्रेम हमेशा मुक्ति नहीं देता। कई बार प्रेम भी पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं और स्वामित्व-बोध से भर जाता है। स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह संबंधों में अधिक समर्पित, अधिक सहनशील और अधिक भावनात्मक रूप से उपलब्ध रहे। परंतु आधुनिक स्त्री इन अपेक्षाओं पर प्रश्न करती है। वह प्रेम में अपनी पहचान खोना नहीं चाहती।[vii]

'एक इंच मुस्कान' में नारी संघर्ष का स्वरूप मनोवैज्ञानिक है। यहाँ स्त्री बाहर से जितनी शांत दिखाई देती है, भीतर उतनी ही जटिल है। वह पुरुष की दृष्टि से परिभाषित होने से इनकार करती है। वह प्रेम करती है, पर प्रेम के नाम पर अपने अस्तित्व का विसर्जन नहीं चाहती। यही आधुनिक स्त्री चेतना का मुख्य रूप है।[vii]

'स्वामी' में स्त्री संघर्ष का स्वरूप कुछ भिन्न है। इस रचना में परंपरा, दाम्पत्य, नैतिकता और स्त्री के भीतर छिपी हुई आकांक्षा का प्रश्न सामने आता है। भारतीय समाज में स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह पति-परायण, मर्यादित और समर्पित रहे। 'स्वामी' इसी नैतिक संरचना के भीतर स्त्री की मानसिक स्थिति को देखने का अवसर देता है।[vii]

यहाँ नारी संघर्ष खुला विद्रोह नहीं है। वह भीतर का द्वंद्व है। स्त्री परंपरा का सम्मान करती है, पर भीतर अपनी इच्छाओं और भावनाओं को भी महसूस करती है। वह दाम्पत्य में है, पर केवल संबंध की औपचारिकता से संतुष्ट नहीं है। वह सम्मान चाहती है, संवाद चाहती है और भावनात्मक स्वीकृति चाहती है। यही संघर्ष उसे जीवंत बनाता है।[vii]

मन्नू भंडारी की रचनाओं में स्त्री का संघर्ष अक्सर इसी सूक्ष्म स्तर पर उपस्थित होता है। वे स्त्री को नारेबाज़ पात्र नहीं बनातीं। उनकी स्त्री अपने जीवन की परिस्थितियों से भीतर-ही-भीतर जूझती है। उसकी चुप्पी भी अर्थपूर्ण होती है। वह कई बार अपने निर्णय स्पष्ट रूप से नहीं बोलती, पर उसका मौन व्यवस्था की असमानता को उजागर कर देता है।[vii]

'एक इंच मुस्कान' और 'स्वामी' को 'आपका बंटी' के साथ पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि मन्नू भंडारी विवाह और प्रेम को स्थिर या पवित्र संस्था के रूप में स्वीकार करके नहीं चलतीं। वे इनके भीतर मौजूद शक्ति-संबंधों को देखती हैं। पति-पत्नी का संबंध बराबरी पर आधारित है या नहीं, प्रेम में स्त्री की स्वतंत्रता सुरक्षित है या नहीं, दाम्पत्य में संवाद है या केवल सामाजिक मर्यादा—ये प्रश्न उनके उपन्यासों में बार-बार लौटते हैं।[vii]

इन रचनाओं में नारी संघर्ष की एक केंद्रीय विशेषता यह है कि स्त्री स्वयं को समझना चाहती है। वह केवल पुरुष से संघर्ष नहीं करती, बल्कि अपने भीतर बसे संस्कारों, अपराध-बोध, प्रेम, अपेक्षा और आत्मसम्मान से भी जूझती है। यह आंतरिक संघर्ष बाहरी संघर्ष से कम महत्वपूर्ण नहीं है। मन्नू भंडारी ने स्त्री की इसी भीतरी मनोभूमि को सूक्ष्मता से चित्रित किया।[vii]

5. महाभोज में नारी संघर्ष और राजनीतिक चेतना

'महाभोज' मन्नू भंडारी के उपन्यास-साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ है। यह उपन्यास इस धारणा को तोड़ता है कि महिला लेखन केवल परिवार, प्रेम या निजी भावनाओं तक सीमित होता है। 'महाभोज' राजनीति, जाति, सत्ता, चुनाव, प्रशासन, हिंसा और जन-संघर्ष का उपन्यास है। इसके केंद्र में एक साधारण जन की मृत्यु है, जिसे सत्ता और राजनीति अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करती है।[vii]

इस उपन्यास में नारी संघर्ष प्रत्यक्ष रूप से केवल स्त्री-पुरुष संबंधों में नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय के प्रश्नों में छिपा हुआ है। बिसू की मृत्यु, बिंदा का प्रतिरोध, रुक्मा की बेचैनी, गाँव का भय, दलित समुदाय की असुरक्षा और राजनीतिक दलों का स्वार्थ—इन सबके बीच स्त्री की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। रुक्मा जैसे पात्र इस उपन्यास में व्यवस्था की हिंसा से प्रभावित समाज की स्त्री-चेतना को सामने लाते हैं।[vii]

'महाभोज' में राजनीति का चेहरा निर्मम है। सत्ता जन-दुख को भी अवसर में बदल देती है। एक स्थान पर राजनीति की नैतिक गिरावट को अत्यंत तीखे ढंग से व्यक्त किया गया है—"राजनीति हमारी विचार-सून्य... आचार-सून्य हो गई है।"

यह कथन केवल राजनीति की आलोचना नहीं है, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की भी आलोचना है जहाँ न्याय, करुणा और मनुष्यता सत्ता-लाभ के आगे कमजोर पड़ जाते हैं।

इस उपन्यास में नारी संघर्ष का प्रश्न इस बात से जुड़ता है कि शोषित समाज की स्त्रियाँ दोहरे-तिहरे दमन से गुजरती हैं। वे जाति से भी प्रभावित हैं, वर्ग से भी, और लैंगिक असमानता से भी। गाँव की स्त्री के लिए संघर्ष केवल पति या परिवार से नहीं है; उसका संघर्ष भूख, भय, हिंसा, जातिगत अपमान, राजनीतिक छल और प्रशासनिक उदासीनता से भी है। इसीलिए 'महाभोज' में स्त्री संघर्ष व्यापक सामाजिक संघर्ष का हिस्सा बन जाता है।

मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' के माध्यम से अपने लेखन को निजी मनोभूमि से सामाजिक-राजनीतिक धरातल तक विस्तृत किया। यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अक्सर महिला लेखन को केवल घरेलू अनुभवों तक सीमित मानने की प्रवृत्ति रही है। 'महाभोज' इस पूर्वाग्रह का सशक्त प्रतिवाद है। यह बताता है कि स्त्री-लेखन समाज और राजनीति की क्रूरताओं को उतनी ही तीक्ष्णता से पकड़ सकता है जितना कोई भी अन्य लेखन।

'महाभोज' में नारी संघर्ष को समझते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यहाँ स्त्री पात्र केंद्र में न दिखते हुए भी संघर्ष की पूरी सामाजिक संरचना से जुड़े हुए हैं। रुक्मा की उपस्थिति केवल व्यक्तिगत दुख की नहीं, बल्कि उस समुदाय की पीड़ा की प्रतिनिधि है जिसे सत्ता लगातार उपयोग करती है। स्त्री यहाँ शोषण की गवाह भी है और प्रतिरोध की संभावित वाहक भी।

इस दृष्टि से 'महाभोज' में नारी संघर्ष सार्वजनिक जीवन से जुड़ता है। यहाँ स्त्री का प्रश्न केवल घर या दाम्पत्य का नहीं है। वह लोकतंत्र, न्याय, जाति और सत्ता के प्रश्नों से भी जुड़ता है। मन्नू भंडारी यह दिखाती हैं कि जब समाज में न्याय का अभाव होता है तो स्त्री का जीवन सबसे अधिक प्रभावित होता है, क्योंकि वह पहले से ही असमान सामाजिक संरचना में स्थित है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी संघर्ष किसी एक तय ढर्रे पर न चलकर एक बहुआयामी और व्यापक फलक पर दिखाई देता है। 'आपका बंटी' में यह संघर्ष दाम्पत्य, मातृत्व और आत्मसम्मान के त्रिकोण के बीच फंसकर शकुन के निर्णयों और उसके कारण बंटी के बिखरते मनोवैज्ञानिक संसार के पारिवारिक परिणामों को उजागर करता है, तो 'एक इंच मुस्कान' आधुनिक महानगरीय जीवन में प्रेम और संबंधों की जटिलता के बीच स्त्री की भावनात्मक गरिमा व पहचान की खोज को रेखांकित करता है। वहीं 'स्वामी' परंपरा, दाम्पत्य और स्त्री की आंतरिक आकांक्षाओं के द्वंद्व को सामने लाता है, जबकि 'महाभोज' इस पूरे विमर्श को घरेलू चहारदीवारी से बाहर निकालकर सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ देता है, जहाँ स्त्री सत्ता, जाति, न्याय और लोकतांत्रिक व्यवस्था की क्रूरता के खिलाफ जन-संघर्ष का हिस्सा बनती है।

इन सभी उपन्यासों का सामूहिक ताना-बाना यह स्पष्ट करता है कि मन्नू भंडारी की स्त्रियाँ केवल नियति को कोसने वाली असहाय पीड़िता मात्र नहीं हैं; वे पीड़ा और सामाजिक दबावों से गुजरती जरूर हैं, पर पूरी तरह सक्रिय रहकर संबंधों को परखती हैं, अपने वजूद को पहचानती हैं और व्यवस्था से टकराकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व का अर्थ खोजती हैं। अंततः, उनका साहित्य यह सिद्ध करता है कि नारी संघर्ष केवल व्यक्तिगत मुक्ति का सीमित प्रश्न नहीं है, बल्कि यह घर, विवाह, मातृत्व और सामाजिक प्रतिष्ठा से लेकर वर्ग, राजनीति और न्याय के व्यापक धरातल तक फैला हुआ एक अत्यंत जीवंत, निजी और सार्वजनिक विमर्श है।

फुटनोट्स

1. मन्नू भंडारी, *एक कहानी यह भी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।
2. भसीन, कमला, *अंडरस्टैंडिंग जेंडर*, वुमेन अनलिमिटेड, 2003।
3. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, *स्वामी* और *महाभोज*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

4. निवेदिता मेनेन, *सीइंग लाइक अ फेमिनिस्ट*, ज़ुबान और पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012।

5. मन्नू भंडारी, *एक कहानी यह भी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

6. सिमोन द बोउवार, द *सेकेंड सेक्स*, विंटेज बुक्स, 2011।

7. मन्नू भंडारी, *महाभोज*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

8. मन्नू भंडारी, *एक कहानी यह भी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

9. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

10. मन्नू भंडारी, *महाभोज*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

11. "मनु भंडारी — उन्होंने हिंदी साहित्य जगत को सशक्त नायिकाएँ दीं," द *इंडियन एक्सप्रेस*, 16 नवंबर 2021।

12. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

13. भसीन, कमला, *अंडरस्टैंडिंग जेंडर*, वुमेन अनलिमिटेड, 2003।

14. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

15. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

16. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

17. निवेदिता मेनेन, *सीइंग लाइक अ फेमिनिस्ट*, ज़ुबान और पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012।

18. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

19. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

20. मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव, *एक इंच मुस्कान*, हिन्दवी।

21. मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव, *एक इंच मुस्कान*, हिन्दवी।

22. सिमोन द बोउवार, *द सेकेंड सेक्स*, विंटेज बुक्स, 2011।

23. मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव, *एक इंच मुस्कान*, हिन्दवी।

24. मन्नू भंडारी, *स्वामी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

25. मन्नू भंडारी, *स्वामी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

26. मन्नू भंडारी, *एक कहानी यह भी*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

27. मन्नू भंडारी, *आपका बंटी*, *एक इंच मुस्कान* और *स्वामी*।

28. निवेदिता मेनेन, *सीइंग लाइक अ फेमिनिस्ट*, ज़ुबान और पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012।

29. मन्नू भंडारी, *महाभोज*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

30. मन्नू भंडारी, *महाभोज*, राधाकृष्ण प्रकाशन।

संदर्भ सूची

"आपका बंटी." राजकमल प्रकाशन, https://www.rajkamalprakashan.com/.

"एक इंच मुस्कान." हिन्दवी, https://www.hindwi.org/.

"मन्नू भंडारी." Pustak.org, http://www.pustak.org/.

"महाभोज." हिन्दवी, https://www.hindwi.org/.

भंडारी, मन्नू और राजेन्द्र यादव. *एक इंच मुस्कान*. हिन्दवी.

भंडारी, मन्नू. *एक कहानी यह भी*. राधाकृष्ण प्रकाशन.

भंडारी, मन्नू. *आपका बंटी*. राधाकृष्ण प्रकाशन.

भंडारी, मन्नू. *महाभोज*. राधाकृष्ण प्रकाशन.

भंडारी, मन्नू. *स्वामी*. राधाकृष्ण प्रकाशन.

भसीन, कमला. *अंडरस्टैंडिंग जेंडर*. वुमेन अनलिमिटेड, 2003.

बोउवार, सिमोन द. *द सेकेंड सेक्स*. अनुवादक: कॉन्स्टेंस बोर्ड और शीला मालोवानी-शेवेलियर, विंटेज बुक्स, 2011.

मेनेन, निवेदिता. *सीइंग लाइक अ फेमिनिस्ट*. ज़ुबान और पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012.

"मनु भंडारी — उन्होंने हिंदी साहित्य जगत को सशक्त नायिकाएँ दीं." *द इंडियन एक्सप्रेस*, 16 नवंबर 2021, https://indianexpress.com/.